B.A Part-3 Paper-7 Psy. Group:A (Clinical Psychology) by Dr. Prabha Shree ((Guest Faculty Psy deptt Vaishali Mahila College, Hajipur) 30.05.2020

प्रक्षेपण परीक्षण का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

(Meaning , Definition and Nature of Projective Test)

प्रक्षेपण प्रविधि द्वारा व्यक्तित्व की माप **परोक्ष रूप से (indirectly)** होती है। प्रक्षेपण परीक्षण वैसे परीक्षण को कहा जाता है जिसके एकांश अस्पष्ट एवं असंगठित होते हैं और जिसके प्रति अनुक्रिया करके व्यक्ति अपने भिन्न-भिन्न प्रकार की शील गुणों की अभिव्यक्ति करता है। Exner (1976) के अनुसार प्रक्षेपण प्रविधि का इतिहास पुराना है। यद्यपि इसका प्रयोग प्राचीन काल में भी होता था, इसका आधुनिक इतिहास का प्रारंभ बिंदु Francis Galton (1879) के उस

सुझाव से होता है जिसमें उन्होंने शब्द-साहचर्य विधि के उपयोग पर बल डाला था। Binet & Henri (1896) ने कुछ तस्वीरों को प्रक्षेपण प्रविधि के रूप में उपयोग किया था तथा Kreapelin ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शब्द-साहचर्य परीक्षण जो एक सरल प्रक्षेपण परीक्षण विधि है, का प्रयोग किया।

इस संक्षिप्त इतिहास के बावजूद प्रक्षेपण विधि के उपयोग के लिए सही प्रेरणा रोर्शाक (Rorschach) के प्रयासों से मिला जिन्होंने स्याही के धब्बे (inkblots) के सहारे 1921 में मशहूर प्रक्षेपण परीक्षण किया जिसे रोर्शाक परीक्षण (Rorschach test) कहा गया। प्रक्षेपण परीक्षण की यह वैज्ञानिक शुरुआत मानी जाती है। 1935 में मार्गन तथा मर्रे ने विषय-आत्मबोधन

परीक्षण (Thematic Apperception Test या TAT) का निर्माण किया जो प्रक्षेपण विधि के क्षेत्र में दूसरी अभूतपूर्व सफलता मानी गई है।

प्रक्षेपण परीक्षण का इतिहास चाहे जो भी कहता हो, नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए इसकी उपयोगिता काफी बतलाई गई है। आधुनिक समय में 'प्रक्षेपण परीक्षण' (projective test) जैसे पद को लोकप्रिय बनाने का श्रेय Frank, (1939) को जाता है। इनके अनुसार इस परीक्षण में व्यक्ति के सामने कुछ अस्पष्ट तथा असंगठित उद्दीपक या परिस्थिति दिया जाता है। ऐसे उद्दीपक को एवं परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति कुछ अनुक्रियाएं करता है। इन अनुक्रियाओं के सहारे व्यक्ति

अचेतन रूप से अपनी इच्छाओं त्रुटियों एवं मानसिक संघर्षों को प्रक्षेपित करता है।

इंग्लिश एवं इंग्लिश (English & English, 1958) ने प्रक्षेपण प्रविधि को परिभाषित करते हुए कहा है, " ऐसी परिस्थिति जो कोई खास अनुक्रिया उत्पन्न नहीं करती हो, में व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रक्षेपण करके उस व्यक्ति के व्यवहार के खास प्रारूप को पता लगाने की विधि को प्रक्षेपण विधि कहा जाता है"

लिण्डजे (Lindzey, 1961) ने प्रक्षेपण परीक्षण का एक काफी विस्तृत परिभाषा दिया है जिसे अधिकतर मनोवैज्ञानिकों ने काफी उपयोगी बतलाया है। इनके अनुसार, "प्रक्षेपण विधि एक ऐसा उपकरण है जो व्यवहार के अचेतन या गुप्त पहलू के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील

होता है, व्यक्ति में नाना प्रकार के अनुक्रियाओं को प्रोत्साहन देता है काफी बहुविमीय होता है तथा यह व्यक्ति को परीक्षण के उद्देश्यों से कम-से-कम अवगत कराते हुए असाधारण रूप में अहम अनुक्रियात्मक आंकड़े प्रस्तुत करता है। यह भी प्रायः सच होता है कि प्रक्षेपण परीक्षण द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्दीपक सामग्री प्राय: अस्पष्ट होते हैं तथा वर्णनकर्ता को संपूर्ण विश्लेषण पर निर्भर करना होता है, परीक्षण से काल्पनिक अनुक्रिया उत्पन्न होती है तथा परीक्षण का कोई सही या गलत अनुक्रिया नहीं होता है"

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें **प्रक्षेपण परीक्षण के स्वरूप** के बारे में निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते हैं-

- प्रक्षेपण परीक्षण का उद्दीपक सामग्री असंगठित एवं अस्पष्ट होते हैं।
- इस तरह के असंगठित उद्दीपक सामग्री के प्रति व्यक्ति को अपनी अनुक्रिया देने के लिए बाध्य किया जाता है और ऐसा करके वह अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं संघर्षों की अभिव्यक्ति करता है।
- प्रक्षेपण परीक्षण व्यक्तित्व मापन का एक परोक्ष (indirect) विधि है क्योंकि इसमें व्यक्ति को परीक्षण का उद्देश्य पता नहीं रहता है।
- प्रक्षेपण परीक्षण में व्यक्ति को अनुक्रिया देने की स्वतंत्रता होती है।
- प्रक्षेपण परीक्षण द्वारा प्राप्त अनुक्रिया की व्याख्या से व्यक्ति अधिक-से-अधिक चरों के

बारे में ज्ञान प्राप्त होता है अर्थात ऐसे परीक्षण बहुउद्देशीय होते हैं। जैसे-इस तरह के परीक्षण से नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को रोगी की आवश्यकताओं, समायोजन, मनश्चिकित्सक श्रेणियां (psychiatric categories), अहम् प्रतिरक्षा (ego defences)आदि के बारे में एक साथ पता चल जाता है।